दैनिक जागरण, भोपाल 13 JAN 2010

# हॉकी का मान बढ़ाने की एवरेस्ट पहल

भारतीय हॉकी पर छाए कोहरे को चीरकर सूरज की एक किरण के रूप में मध्यप्रदेश की शिवराजसिंह चौहान सरकार की पहल सामने आयी है। सरकार ने ऐलान किया है कि वह भारतीय हॉकी टीम का खर्च उठाने को तैयार है। उसने खिलाड़ियों के प्रशिक्षण, वेतन और भत्तों को वहन करने की पेशकश की है। पुणे में अभ्यास शिविर का बहिष्कार कर बगावत का बिगुल बजा चुकी भारतीय हॉकी टीम के लिए म.प्र. सरकार की यह पहल जहां आशा का संचार करेगी, वहीं भारतीय हॉकी के लिए वह संजीवनी साबित हो सकती है।

यह कोई अनायास नहीं हुआ कि शिवराज सरकार ने यूं हॉकी के प्रति अपने अनुराग को जाहिर किया हो। यह कोई सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए चली गई राजनीतिक चाल भी नहीं है। न ही यह कोई तात्कालिक पहल है। भारतीय खेलों के पैरोकार व खालिस देसी सोच रखने वाले मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के मन-मस्तिष्क पर क्रिकेट से ज्यादा हॉकी अभिमंडित है। कम ही लोग इस बात को जानते होंगे कि भोपाल में हॉकी अकादमी की स्थापना कर उसकी बागडोर अशोक कुमार को सौंपी गई है। पूर्व ओलंपियन अशोक कुमार न केवल भारतीय हॉकी टीम का लम्बे समय तक प्रतिनिधित्व कर चुके हैं, बल्कि वे भारतीय हॉकी के मसीहा और जादूगर के खिताब से नवाजे मेजर ध्यानचंद के बेटे हैं। अशोक कुमार पूरे जोर-शोर से इस अकादमी का संचालन कर रहे हैं, जिसके तहत वे प्रदेश भर से हॉकी की उभरती प्रतिभाओं को तलाशकर उन्हें भोपाल लाते हैं और उन्हें तराशकर भारतीय हॉकी को एक बार फिर समृद्ध, सशक्त और विश्व विजेता बनाने के संकल्प में जुटे हैं।

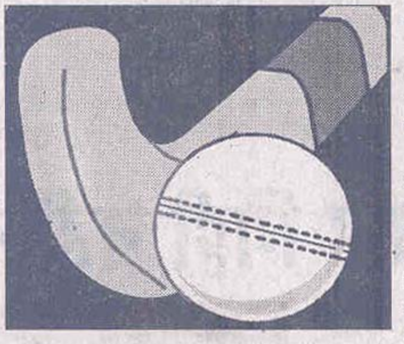

यह सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण है कि दशकों तक दुनिया में हॉकी का सिरमोर रहा भारत सातवें दशक के बाद एक अदद स्वर्ण पदक को तरस गया। 1964 के टोक्यो ओलंपिक में पाकिस्तान को शिकस्त देकर स्वर्ण पदक हासिल करने वाली भारतीय हॉकी टीम फिर कभी सिर उठाकर जी न सकी। कहने को उसने रूस में स्वर्ण पदक जीता अवश्य, लेकिन अन्य श्रेष्ठ टीमों की गैर हाजिरी में।

बीते तीस-चालीस सालों में हॉकी की राजनीति ज्यादा हावी रही। राजनीतिक वर्चस्व वाले इनके पदाधिकारियों के अहम के चलते खेल को गुमनामी के कब्रिस्तान में दफन कर दिया गया। इस दरम्यान क्रिकेट के जादू ने ऐसा समा बांधा कि पूरा देश ही उसकी आगोश में गिरफ्त हो गया। उसमें ग्लैमर, पैसा और पहचान बढ़ने लगी। हर उम्र वर्ग में उसके प्रति पैदा हुई दीवानगी ने सबसे ज्यादा नुकसान हॉकी का किया। बेशक कथित खेल विशेषज्ञों, खेल और ओलंपिक संगठन से जुड़े शातिर दिमाग लोगों ने भी हॉकी की उपेक्षा शुरू कर दी। हश्र सामने है।

आज भारतीय हॉकी फेडरेशन की जेब खाली है और दिमाग का दिवाला निकल चुका है। किसी कारखाने के मजदूर की तरह या कर्मचारी संघों के सदस्यों की तरह यदि हॉकी टीम के खिलाड़ी 'पैसा नहीं तो काम नहीं' की तर्ज पर मोर्चा खोले बैठे हैं तो वे गलत नहीं ठहराए जा सकते। देश की आन-बान के नाम पर हम खिलाड़ियों के घरों के चूल्हे-चौके को उजाड़ नहीं सकते। उनके परिवार वालों को बेबसी और खिलाड़ियों को हताशा का शिकार नहीं बनने दे सकते। बेशक इस पर बहस हो सकती है कि लोग क्रिकेट को ज्यादा क्यों पसंद करते हैं या यह कि आज के अभिभावक अपने शहजादे को क्रिकेटर क्यों बनाना चाहते हैं या प्रायोजक क्रिकेट व क्रिकेटरों पर अथाह धन क्यों बरसाते हैं या आई पीएल क्रिकेट का क्यों होता है? लेकिन इस पर कोई बहस या संदेह नहीं हो सकता कि यदि केन्द्र और राज्य सरकारें हॉकी के उन्नयन में जुट जाना जगह-जगह हॉकी अकादमी बनाकर प्रतिभाओं को तराशा जाकर टेस्ट वन डे, टी-ट्वेंटी और आईपीएल जैसे आयोजन हॉकी के लिए भी किए जाय तो भारत में हॉकी का स्वर्णिम दौर फिर लाट आए।

खेल संगठनों में जितनी जो आजमाइश, सत्ता संघर्ष हो रहा है, उसकी आधी ऊर्जा भी यदि खेलों के उत्थान पर खर्च कर दी जाय तो ऐसे बहुत सारे खेलों में हम परचम फहरा सकते हें, जिनमें इस वक्त फिसड्डी हैं।

बेशक, ऐसे माहौल में मध्यप्रदेश सरकार की मंशा और मदद के हौसले की दाद दी जानी चाहिए। म.प्र. में न तो खेलों का कोई अतिरिक्त माहौल है और न ही यह अपेक्षित रूप से समृद्ध राज्य है। फिर भी शिवराज सरकार ने हॉकी टीम का मनोबल बढ़ाने की एवरेस्ट पहल कर डाली है। अक बारी भारतीय हॉकी फेडरेशन की है। वह केवल अनुशासन के लिहाज से ही सोचेगी और खिलाड़ियों की परिस्थितिजन्य मनोदशा को न समझते हुए निलंबन, निष्कासन जैसी कार्रवाई को अंजाम देना अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता समझेगी तो फिर हो चुका हॉकी का भला।

जिस तरह भूखे पेट भजन नहीं हो सकता, उसी तरह अभावग्रस्त, उपेक्षित साधनहीन होकर खेल में जान भी नहीं डाली जा सकती। मध्यप्रदेश के लिए भी यह एक सुनहरा अवसर है जब वह एक तरह से हॉकी को गोद लेकर इसके पुनर्जीवन में सहभागी बनेगा। प्रदेश ने हॉकी में पद्मश्री शंकर लक्ष्मण, असलम खेर खान, समीर दादर, जलालुद्दीन, शिंदे जैसे अन्तर्राष्ट्रीय सितारे दिये हैं। लम्बे समय से जारी इस रिक्तता को भरने का वक्त सामने आता प्रतीत हो रहा है। म.प्र. हॉकी अकादमी यदि लम्बी पारी खेलती है तो वह हॉकी की नई पौधा बेशक तैयार कर देगी। इसका संकेत यह भी माना जा सकता है कि विश्वकप की तैयारी के लिए पुणे जाने से पहले भारतीय हॉकी टीम भोपाल स्थित हॉकी अकादमी में अभ्यास कर चुकी है।

रमण रावल